जनजातीय विवाह

विवाह का संस्था प्रायः सभी समाजों में पायी जाती है। यह एक अति प्राचीन एवं आवश्यक संस्था है। प्रत्येक समाज में स्त्री-पुरुषों के यौन-सम्बन्धों के लिये कुछ नियम पाये जाते हैं, इन्हीं नियमों के आधार पर एक पुरुष, एक स्त्री या अनेक स्त्रियों से यौन-सम्बन्ध रखता है। समय के परिवर्तन के साथ-साथ विवाह की संस्था के स्वरूप भी बदलते रहे हैं।

जनजातीय	adj	tribal
विवाह	m	marriage
संस्था	f	institution
प्रायः	adv	almost
समाज	m	society
अति	adv	extremely
प्राचीन	adj	ancient
आवश्यक	adj	necessary
प्रत्येक	adj	every
यौन	adj	sexual
सम्बन्ध	m	relationship
नियम	m	regulation
के आधार पर	pp	on the basis of
परिवर्तन	m	change
स्वरूप	m	form
बदलना	i	to change

विवाह का अर्थ

१ - हॉबल की परिभाषा - " विवाह एक सामाजिक प्रतिमानों का जाल है जो कि विवाहित दम्पति के पारस्परिक, उन के रक्त-सम्बन्धियों के , उनके बच्चों के प्रति तथा समाज के प्रति सम्बन्धों को परिभाषित तथा नियन्त्रित करता है ।"

२ - वेस्टरमार्क की परिभाषा - " विवाह एक या अधिक पुरुषों का एक या अधिक स्त्रियों के साथ होनेवाला वह सम्बन्ध है जो प्रथा या कानून द्वारा

अर्थ	m	meaning
हॉबल	PN	E. A. Hoebel
परिभाषा	f	definition
सामाजिक	adj	social
प्रतिमान	m	norm
जाल	m	complex (net)
विवाहित	adj	mated, married
दम्पति	m	pair
पारस्परिक	adj	mutual
रक्त-सम्बन्धी	m	kinsman
बच्चा	m	offspring
परिभाषित	adj	defined
नियन्त्रित	adj	controlled
वेस्टरमार्क	PN	Westermark
अधिक	adj	more
प्रथा	f	custom
कानून	m	law

स्वीकृत होता है तथा जिसमें संगठन में आने-वाले उभयपक्षों तथा उनसे उत्पन्न बच्चों के अधिकार व कर्तव्यों का समावेश होता है ।"

विवाह एवं परिवार

विवाह एवं परिवार एक दूसरे के पूरक माने जाते हैं । विवाह या परिवार में किस संस्था का विकास पहले हुआ बताना कठिन है । किन्तु इन दोनों में अन्तर है । परिवार एक समिति है, जो कि विवाह की संस्था को स्थायित्व देती है । विवाह केवल एक संस्था ही है, जब कि परिवार समिति एवं संस्था दोनों ही है ।

स्वीकृत	adj	accepted
संगठन	m	union
उभय+पक्ष	adj+m	both parties
उत्पन्न	adj	born
अधिकार	m	rights
व	conj	and
कर्तव्य	m	duties
समावेश	m	involvement
एवं	conj	and
परिवार	m	family
पूरक	m	complement
विकास	m	extent
अन्तर	m	difference
समिति	f	association
स्थायित्व	m	stability

विवाह एवं संसर्ग

इन दोनों के अन्तर को भी यहाँ समझ लेना आवश्यक है। संसर्ग का तात्पर्य स्त्री तथा पुरुष के मैथुन से भिन्न है जोकि कामतृप्ति के लिये किया जाता है। इस प्रकार का सम्बन्ध समाज स्वीकृत तथा अस्वीकृत दोनों ही प्रकार के हो सकते हैं। जनजातियों में यह आवश्यक नहीं है कि संसर्ग विवाहोपरान्त ही किया जाए। अनेक भारतीय जनजातियों में जैसे नागा*, खासा*, धारु*, खासी* आदि में पूर्व-विवाह तथा अतिरिक्त-विवाह सम्बन्ध किये जा सकते हैं। परन्तु विवाह केवल संसर्ग के लिए ही नहीं होता है। इसमें अनेक सामाजिक दायित्व भी निहित हैं।

विवाह की उत्पत्ति

विवाह की उत्पत्ति कब हुई ? कैसे हुई ? यह विद्वानों के सामने एक

संसर्ग	m	mating
तात्पर्य	m	purpose
मैथुन	m	intercourse
भिन्न	adj	distinct
स्वीकृत	adj	accepted
जनजाति	f	tribe
-उपरान्त	suffix	-after
पूर्व-	prefix	pre-
अतिरिक्त-	prefix	extra-
दायित्व	m	responsibility
निहित	adj	placed
उत्पत्ति	f	origin
विद्वान	m	scholar

* names of tribes

जटिल प्रश्न रहा है। प्रत्येक समाज में विवाह की उत्पत्ति की अपनी अपनी किंवदन्तियाँ पायी जाती हैं।

विवाह की उत्पत्ति के विषय में सर हरबर्ट स्पेन्सन ने विकासवादी सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। इस मत की पुष्टि एवं वृद्धि मॉर्गन ने की।

मॉर्गन महोदय ने सबसे पहले यौन संकरता की स्थिति से लेकर आज तक के एक-विवाह पद्धति को पाँच भागों में विभाजित किया है। इसका

जटिल	adj	complex
प्रश्न	m	question
किंवदन्ती	f	folk-tradition; hearsay
के विषय में	pp	with respect to
हरबर्ट स्पेन्सन	PN	Herbert Sphenson
विकासवादी	adj	evolutionary
सिद्धान्त	m	theory
प्रतिपादन	m	demonstration, proof
मत	m	thesis, theory
पुष्टि	f	strengthening
वृद्धि	f	expansion
मॉर्गन	PN	Morgan
महोदय	title	Sir
संकरता	f	promiscuity
एक-विवाह	m	monogomy
पद्धति	f	system, custom
विभाजित करना	adj+t	to divide

मत है कि सब से पहले संकरता की स्थिति थी। इसके प्रमाण में मॉर्गन का कहना है कि अनेक जनजातियों में समूह-विवाह पाया जाता है। तथा इन के सम्बन्ध निश्चित करने वाले शब्द भी बहुत कम हैं, एक शब्द अनेक लोगों के लिये सम्बोधन किया जाता है, जैसे 'अमी' शब्द का प्रयोग बुआ, समधिन, सास, जेठानी तथा देवरानी सभी के लिए होता है। इसी प्रकार अनेक जनजातियों में यौन-सम्बन्धों की शिथिलता है। उसका कथन है कि एक विवाह पद्धति तो सबसे बाद की स्थिति है। मॉर्गन के सिद्धान्त की आलोचना - इसके मत के विरुद्ध विद्वानों के निम्न आपत्तियाँ उठायी हैं।

प्रमाण	m	proof, thesis
समूह	m (adj)	group
निश्चित	adj	definite
सम्बोधन करना	m+t	to use (a word)
प्रयोग	m	use
बुआ	f	father's sister
समधिन	f	mother-in-law of son or daughter
सास	f	mother-in-law
जेठानी	f	wife of husband's elder brother
देवरानी	f	wife of husband's younger brother
शिथिलता	f	looseness, laxity
कथन	m	statement
आलोचना	f	criticism
के विरुद्ध	pp	against
निम्न	adj	following, stated below
आपत्ति	f	trouble, difficulty
उठाना	t	to raise

१ - प्रमाणों के अभाव में विवाह इन पाँच स्तरों -- संकरता, समूह-विवाह, मिथुनीकृत-विवाह, बहुपत्नी-विवाह तथा एक-विवाह -- में से गुज़रा होगा, कल्पना पर आधारित है।

२ - अनेक समाजों में एक साथ विवाह के कई स्तर देखने को मिलते हैं।

३ - अधिकतर जनजातियों में एक-विवाह को मानती हैं।

४ - आदितम जनजातियों में भी संकरता का कोई प्रमाण नहीं मिलता।

५ - लोवी का कथन है कि समूह-विवाह नवीन ही है। उसने लिखा है, "इस लिये समूह-विवाह का विकास आधुनिक युग में तुलनात्मक रूप में आवद्ध समाज में हो सकता है। अतएव हम समूह-विवाह को मानव विवाह

अभाव	m	lack
स्तर	m	phase, level
मिथुनीकृत	adj	pairing
बहुपत्नी-विवाह	m	polygyny
गुज़रना	i	to pass
कल्पना	f	conjecture
आधारित	adj	based
अधिकतर	adj	for the most part
आदितम	adj	earliest
लोवी	PN	R.H. Lowie
नवीन	adj	new
आधुनिक युग	adj+m	modern age
तुलनात्मक रूप में	adv	comparatively
आवद्ध	adj	sophisticated
अतएव	canj	therefore
मानव	m/adj	human

के इतिहास से हटा सकते हैं। क्यों कि वह न आवश्यक है न आवश्यकता से प्राचीन है।"

६ - वैस्टरमार्क ने भी लिखा है, "विवाह की संस्था की उत्पत्ति के लिए मैं यह सोचता हूँ कि यह संभवतया आदिकालिक आदत से ही विकसित हुई है।"

आजकल के मानव शास्त्री एवं समाज शास्त्री विवाह की उत्पत्ति जैसे, निरर्थक प्रश्नों में उलझना पसन्द नहीं करते हैं।

विवाह के भेद

भिन्न-भिन्न समाजों में भिन्न-भिन्न प्रकार के विवाह की पद्धतियाँ पायी जाती हैं। इन में निम्न पद्धतियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इतिहास	m	history
हटाना	t	to eliminate
आवश्यकता से	adv ph	necessarily
सम्भवतया	adv	most probably
आदिकालिक	adj	primeval
आदत	adj	habit
विकसित	adj	developed
शास्त्री	m	scholar, scientist
निरर्थक	adj	meaningless
उलझना	i	to debate
अतः	adj	therefore
अन्तिम	adj	final
भेद	m	division; form
विशेष रूप से	adv ph	particularly
उल्लेखनीय	adj	noteworthy

१ - एक-विवाह
२ - बहु-विवाह
  अ - बहुपत्नी-विवाह
  ब - बहुपति-विवाह
  स - द्विपत्नी-विवाह
  द - समूह-विवाह

१ - एक-विवाह

पिडिंगटन के अनुसार "एक-विवाह विवाह का वह स्वरूप है जिस में कोई भी पुरुष एक समय में एक स्त्री से अधिक के साथ विवाह नहीं कर सकता है।" इस विवाह का विच्छेद साधारण स्थिति में मरण के बाद ही होता है। परन्तु जिन समाजों में इस प्रकार की पद्धति पायी जाती है, उस में पुरुष और स्त्री एक दूसरी स्त्री अथवा पुरुष से बिना सम्बन्ध-विच्छेद किये,

---

बहुपति-विवाह	m	polyandry
द्विपत्नी-विवाह	m	bigamy
पिडिंगटन	PN	R. Piddington
स्वरूप	m	form
विच्छेद	m	dissolution
साधारण	adj	ordinary
मरण	m	death
अथवा	conj	or
बिना...किये	prep.ph	without doing...
सम्बन्ध-विच्छेद	m	divorce

अन्य व्यक्ति से विवाह नहीं कर सकते हैं। भारत की अधिकाँश जनजातियों में एक-विवाह प्रथा ही पायी जाती है। एक-विवाह की प्रथा आसाम की खासी*, बिहार की संथाल*, केरल की कादर* तथा हो* आदि में पायी जाती है। आदि जातियों में एक-विवाह के पाये जाने के अनेक कारण हैं, इन में (१) पत्नी की क़ीमत का अधिक होना, जैसे हो में (२) स्त्रियों के अधिक होने से गृह कलह होना, तथा (३) एक से प्रेम अधिक समय तक एवं सहयोग का बिना रहना, मुख्य हैं। मेलिनोवस्की ने इसे श्रेष्ठ एवं प्रकृति के नियम के अनुकूल माना है।

व्यक्ति	m	person, individual
अधिकाँश	adj	most
प्रथा	f	custom
हो	PN	the Ho tribe
कारण	m	reason
पत्नी की क़ीमत	f	bride-price
गृह	m	house
कलह	m	quarrel
प्रेम	m	love
सहयोग	m	help
मेलिनोवस्की	m	Malinowski
श्रेष्ठ	adj	best
नियम	m	rule
के अनुकूल	pp	in conformity with

* names of tribes

२ - बहुविवाह

बहुविवाह वह विवाह है जिसमें कि एक पुरुष एक समय में अनेक पत्नियाँ रखता है, अथवा एक स्त्री अनेक पति रखती है; या अनेक पुरुष अनेक अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखते हैं। बालसरा ने बहुविवाह की परिभाषा इस प्रकार की है, "विवाह का वह प्रकार जिसमें सदस्यों की बहुल्यता होती है, बहुविवाह कहलाता है।" बहुविवाह की प्रथा अनेक समाजों में मिलती है। भारत की टोड़ा*, गौंड*, वैगा* आदि जनजातियों में इस प्रकार की विवाह-प्रणाली है। बहुविवाह के निम्न स्वरूप प्रमुख हैं -

(अ) बहुपत्नि-विवाह

बहुपत्नि-विवाह वह विवाह है, जिस में एक पुरुष अनेक स्त्रियों के साथ विवाह करे। भारत की अनेक जनजातियों में यह प्रथा पायी जाती है, जैसे नागा*, गौंड*, वैगा*, टोडा* तथा मध्य-भारत की अन्य प्रोटा-आस्ट्रेलायड प्रजाति की जनजातियाँ। रिवर्ज़ महोदय का मत है कि यह सामान्य रूप से सभी जगह पाई जाती है, परन्तु शक्तिशाली एवं धनवान ही ऐसा करते हैं।

बालसरा	PN	Balsara
सदस्य	m	member, partner
बहुल्यता	f	plurality
प्रणाली	f	custom
प्रमुख	adj	most important
मध्य	adj	middle
प्रजाति	f	race
रिवर्ज़	PN	Rivers
सामान्य रूप से	adv ph	ordinarily
शक्तिशाली	adj	powerful
धनवान	adj	wealthy

* names of tribes

बहुपत्नि-विवाह की प्रथा में अनेक कारण रहे मालूम पड़ते हैं। इनमें मुख्य कारण (१) पुरुष की अधिक सन्तानों की इच्छा (२) स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक होना (३) नवीन स्त्री को रखने की इच्छा (४) प्रथम पत्नी से सन्तोष न होना - गर्भावस्था तथा मासिक धर्म के समय इच्छा की पूर्ति न होना (५) घर में श्रम सुविधा के लिए अधिक पत्नियों का रखना, आदि हैं।

बहुपत्नी विवाह की संस्था से समाज में जहाँ अनेक लाभ - (१) घर में ठीक से श्रम विभाजन (२) बच्चों का उचित पालन-पोषण (३) घर में पति की कामवासना का पूरा होना आदि हैं, वहाँ अनेक हानियाँ - (१) परिवार का

संख्या	f	number
सन्तान	m	progeny
इच्छा	f	desire
सन्तोष	m	contentment
गर्भावस्था	f	pregnancy
मासिक धर्म	adj+m	menstrual period
पूर्ति	f	completion
श्रम	m	labour
सुविधा	f	benefit
लाभ	m	advantage
विभाजन	m	division
उचित	adj	proper
पालन-पोषण	m	rearing
कामवासना	f	sexual desires
हानि	f	detriment

आर्थिक व्यय बढ़ जाना (२) परिवार में कलह का रहना (३) स्त्रियों की निम्न स्थिति होना आदि भी हैं।

आर्थिक	adj	economic
व्यय	m	expense
बढ़ना	i	to increase